आभार

वर्षों के अथक परिश्रम के पश्चात् एवं सुमधुर एवं सुखद वेला उपस्थिति हुई है। आज कृतज्ञता के अपरिमित शब्दों द्वारा मैं अपने इष्टदेव की वन्दना करना अपना परम कर्तव्य समझती हूँ जिनके आशीर्वाद, सहयोग एवं प्रेरणा से यह कार्य सम्पन्न हुआ है। सर्वप्रथम मैं अपने इष्टदेव एवं पितृदेव को स्मरण करना चाहूँगी, जिनकी कृपा एवं आशीर्वाद से मैं इस कार्य में सफलता प्राप्त की।

इस शोध कार्य को मूर्त रूप प्रदान करने में सबसे अधिक योगदान परम श्रद्धेय गुरुवर डॉ. नरेन्द्र कुमार शर्मा, व्याख्याता, बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय, अलवर का है जिनके कुशल एवं विद्वतापूर्ण निर्देशन, प्रेरणा एवं सहयोगात्मक व्यवहार के कारण मैं इस कार्य को निर्धारित समयावधि में पूर्ण कर पाई। उन्होंने जिस अपार स्नेह व आत्मीयता के साथ मेरा मार्ग निर्देशन किया एवं कदम-कदम पर मेरी कठिनाईयों को सुलझाकर, मुझे अपना अमूल्य समय देकर इस कार्य को सम्पन्न कराया। उनकी स्नेहपूर्ण कृपा के प्रति मैं तहे दिल से असीम श्रद्धा व कृतज्ञता प्रकट करती हूँ।

मैं अपनी विभागाध्यक्ष प्रोफेसर विभा उपाध्याय मैडम की हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे आवश्यक सद्परामर्श, नैतिक और भावनात्मक संबल एवं प्रोत्साहन दिया, साथ ही डॉ. (श्रीमती) प्रमिला सिंघवी, व्याख्याता, राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर, डॉ. (श्रीमती) मीना गौड़, विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर, प्रो. के.एस. गुप्ता, पूर्व प्रोफेसर इतिहास विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, श्री धर्मपाल शर्मा, शोध अधिकारी, प्रताप शोध प्रतिष्ठान, भूपाल नोबल्स संस्थान, उदयपुर, डॉ. ईश्वर सिंह राणावत, प्रताप शोध प्रतिष्ठान, भूपाल नोबल्स संस्थान, उदयपुर, डॉ. मोहब्बत सिंह राठौड़ प्रताप शोध प्रतिष्ठान, भूपाल नोबल्स संस्थान, उदयपुर के मार्गदर्शन के लिए मैं उनके प्रति हृदय से आभारी हूँ।

सदैव से ही मेरे सुखमय भविष्य के प्रति चिन्तित एवं मेरे शैक्षिक जीवन को प्रतिपल दिशा बोध कराने वाले मेरे आदरणीय पिता श्री शिवलाल आर्य, माता श्रीमती चंदा आर्य

मेरे लिए प्रेरणा के अजस्र स्रोत रहे हैं। इस शोध कार्य सहित मेरी समस्त शैक्षणिक उपलब्धियाँ उनकी मौन तपश्चर्या तथा मेरे प्रति मुक्त आशीर्वाद एवं स्नेह का ही सुफल है।

शोध कार्य को पूर्ण करने में मेरे पति श्री संदीप वर्मा ने अपना सहयोग मुझे प्रदान किया एवं कार्य को पूर्ण करने में आयी हुई अनेक बाधाओं को दूर करके मेरे भविष्य का मार्ग प्रशस्त किया। मुझे कार्य के दौरान अनेक पारिवारिक दायित्वों से मुक्त कर अध्ययन हेतु पर्याप्त समय एवं प्रेमपूर्ण सद्व्यवहार प्रदान किया, यह शोध कार्य उन्हीं के स्नेह का सुंदर परिणाम है।

इस शोध प्रबन्ध को पूर्णरूप प्रदान करने में सर्वाधिक निःस्वार्थ सहयोग मेरा भ्राता प्रमोद आर्य का है, जिसने अपना अमूल्य समय देकर मुझे सकारात्मक समर्थन व प्रोत्साहन दिया, इसके लिए मैं उसके प्रति हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

जिन पुस्तकालयों से मुझे उपयोगी सामग्री मिली उनमें केन्द्रीय पुस्तकालय राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, डॉ. राधाकृष्णन केन्द्रीय पुस्तकालय, जयपुर, प्राकृत भारती अकादमी पुस्तकालय मालवीय नगर, जयपुर। इन सभी पुस्तकालयाध्यक्षों व पुस्तकालय सदस्यों के सहयोग के प्रति भी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिन्होंने समय-समय पर पुस्तकें, पत्रिकाएँ व शोध ग्रन्थ प्रदान कर मुझे कृतार्थ किया है। मैं उन सभी विद्वानों, लेखकों, शोधकर्ताओं और ग्रंथागारों के प्रति भी अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिनका सहयोग मेरा सम्बल बन सका।

प्रस्तुत अध्ययन एवं शोध अनुसंधान के निमित्त जिन प्राचीन एवं अर्वाचीन कृतियों का उपयोग किया गया है, उन सभी लेखकों एवं इतिहासकारों के प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ। अन्त में मैं उन सभी विद्वज्जनों के प्रति अपना आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से इस कार्य में सहयोग प्रदान किया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को पूर्ण करते समय न चाहते हुए भी हो सकता है कुछ त्रुटियाँ रह गई हों इसके लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

शर्मिला